Shodh Sangam Patrika
ISSN: 3049-0707 Volume 2 | Issue 1 | (Jan – Mar 2025)

भारत में ऊर्जा संकट: कारण और समाधान

Ravi Verma
Allahabad Degree College, Prayagraj

सारांश:

भारत में ऊर्जा संकट एक गंभीर समस्या बन चुकी है, जो देश के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय तंत्र को प्रभावित कर रही है। इसका मुख्य कारण ऊर्जा संसाधनों की कमी, बढ़ती जनसंख्या और ऊर्जा की मांग, और ऊर्जा वितरण की असमानताएँ हैं। कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे पारंपरिक स्रोतों की समाप्ति और अक्षय ऊर्जा के अपर्याप्त विकास ने इस संकट को बढ़ाया है। साथ ही, ऊर्जा संकट का सामाजिक प्रभाव भी गहरा है, जिससे गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की कमी और जीवनस्तर पर असर पड़ता है। समाधान के रूप में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर, पवन और जल ऊर्जा के अधिकतम उपयोग, ऊर्जा दक्षता सुधार, और वैकल्पिक ऊर्जा प्रौद्योगिकियों की ओर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। इसके अलावा, सरकार की नीति और योजनाओं में सुधार और ऊर्जा संरक्षण कानूनों का कड़ाई से पालन भी ऊर्जा संकट के समाधान के लिए जरूरी है। इस शोध पत्र का उद्देश्य ऊर्जा संकट की जटिलताओं को समझते हुए इसके स्थायी और प्रभावी समाधान प्रदान करना है, ताकि भारत में ऊर्जा की उपलब्धता और समृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

परिचय:

भारत में ऊर्जा संकट एक महत्वपूर्ण और लगातार बढ़ती हुई समस्या बन चुकी है, जो न केवल देश के विकास को प्रभावित करती है, बल्कि इसके सामाजिक और पर्यावरणीय परिणाम भी गंभीर हो सकते हैं। ऊर्जा संसाधनों की बढ़ती मांग, उनके अपर्याप्त आपूर्ति, और वितरण में असमानताएँ भारत के ऊर्जा क्षेत्र में गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही हैं। ऊर्जा एक देश की आर्थिक प्रगति और सामाजिक कल्याण के लिए आवश्यक है, और यह उद्योग, परिवहन, कृषि, और घरेलू उपयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारत की बढ़ती जनसंख्या और तेज़ी से विकासशील अर्थव्यवस्था के कारण ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ रही है। लेकिन देश में कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों की कमी, साथ ही अक्षय ऊर्जा संसाधनों के अपर्याप्त विकास के कारण ऊर्जा संकट गहरा रहा है। इसके परिणामस्वरूप, उद्योगों और घरेलू उपभोक्ताओं को बिजली की असमय आपूर्ति, उच्च विद्युत दरें, और पर्यावरणीय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

इस शोध पत्र में भारत में ऊर्जा संकट के कारणों का विश्लेषण किया जाएगा, साथ ही इसके सामाजिक और आर्थिक प्रभावों पर चर्चा की जाएगी। इसके साथ ही, इस संकट के समाधान के रूप में विभिन्न नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के विकास, ऊर्जा दक्षता में सुधार और वैकल्पिक ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के उपयोग की संभावना की जांच की जाएगी। इस शोध का उद्देश्य भारत में ऊर्जा संकट को सुलझाने के लिए प्रभावी और स्थायी उपायों का प्रस्ताव देना है।

भारत में ऊर्जा संकट के कारण

भारत में ऊर्जा संकट एक जटिल समस्या है, जिसके कई कारण हैं। सबसे पहला और प्रमुख कारण ऊर्जा संसाधनों की कमी है। भारत का अधिकांश ऊर्जा उत्पादन पारंपरिक स्रोतों, जैसे कोयला, तेल, और प्राकृतिक गैस पर निर्भर करता है। हालांकि, इन स्रोतों की उपलब्धता सीमित है और उनकी खपत बढ़ती जा रही है। कोयला, जो भारत का प्रमुख ऊर्जा स्रोत है, अब धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है, और नए खनन क्षेत्रों में निवेश भी सीमित हो चुका है। इसके अलावा, प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम जैसे अन्य ऊर्जा संसाधन भी भारत के लिए आयातित हैं, जिससे विदेशी मुद्रा का भारी खर्च होता है और आपूर्ति में अस्थिरता उत्पन्न होती है।

दूसरा बड़ा कारण ऊर्जा की बढ़ती मांग है। भारत की जनसंख्या लगातार बढ़ रही है, और इसके साथ ही आर्थिक विकास, औद्योगिकीकरण, और शहरीकरण के कारण ऊर्जा की खपत भी तेजी से बढ़ी है। विशेष रूप से, ऊर्जा-गहन उद्योगों और परिवहन क्षेत्र की वृद्धि ने मांग को और भी बढ़ा दिया है। इसके परिणामस्वरूप, ऊर्जा का आपूर्ति और मांग के बीच संतुलन बनाए रखना कठिन हो गया है। अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की आपूर्ति अभी भी अपर्याप्त है, जबकि शहरी क्षेत्रों में बिजली कटौती और अधूरी आपूर्ति आम समस्या बन चुकी है।

इसके अतिरिक्त, ऊर्जा वितरण प्रणाली में भी गंभीर समस्याएँ हैं। भारत में विद्युत वितरण नेटवर्क की अव्यवस्था और पुरानी तकनीकी खामियाँ इसकी प्रमुख वजह हैं। वितरण कंपनियों द्वारा विद्युत लाइन में नुकसान, बिजली चोरी, और खराब प्रबंधन के कारण ऊर्जा का अधिकांश हिस्सा अपव्यय हो जाता है। इसके अलावा, भारत में ऊर्जा वितरण असमान है, जहां शहरी क्षेत्रों में बिजली की उपलब्धता बेहतर है, वहीं ग्रामीण इलाकों में स्थिति बहुत खराब है। इसके कारण, ग्रामीण क्षेत्रों में विकास अवरुद्ध हो जाता है और वहाँ रहने वाले लोग ऊर्जा संकट से जूझते हैं।

पर्यावरणीय कारण भी भारत के ऊर्जा संकट को बढ़ाते हैं। पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों जैसे कोयला और पेट्रोलियम के उपयोग से होने वाला प्रदूषण जलवायु परिवर्तन की समस्या को और गंभीर बनाता है। भारत का ऊर्जा क्षेत्र कार्बन उत्सर्जन में सबसे बड़ा योगदानकर्ता है, जो पर्यावरणीय संकट को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन के कारण अक्षय ऊर्जा स्रोतों का विकास प्रभावित हो रहा है, जैसे कि पवन और सौर ऊर्जा में मौसम और जलवायु की अनिश्चितताएँ इसके उत्पादन को प्रभावित करती हैं।

ऊर्जा संकट के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

भारत में ऊर्जा संकट का समाज और अर्थव्यवस्था पर गहरा असर पड़ रहा है। इस संकट के कारण न केवल देश की विकास दर प्रभावित हो रही है, बल्कि इसका व्यापक प्रभाव जनता की जीवनशैली, रोजगार, और समग्र जीवनस्तर पर भी पड़ता है। ऊर्जा संकट के सामाजिक और आर्थिक प्रभावों को समझना जरूरी है, ताकि इसके समाधान के लिए उचित कदम उठाए जा सकें।

सामाजिक प्रभाव:

1. **सामाजिक असमानताएँ:** ऊर्जा संकट का सबसे प्रमुख प्रभाव सामाजिक असमानताओं को बढ़ाता है। जहां शहरी और विकसित क्षेत्रों में बिजली की उपलब्धता और आपूर्ति बेहतर है, वहीं ग्रामीण और दूर-दराज़ इलाकों में बिजली की कमी और अनियमित आपूर्ति आम समस्या बन चुकी है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में विकास अवरुद्ध हो जाता है और स्थानीय स्तर पर शैक्षिक, स्वास्थ्य और औद्योगिक गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं। इस असमान

ऊर्जा वितरण से समाज में सामाजिक असमानताएँ और बढ़ जाती हैं, जिससे गरीब और पिछड़े वर्गों की स्थिति और भी विकट हो जाती है।

2. **स्वास्थ्य पर प्रभाव:** ऊर्जा संकट के कारण स्वास्थ्य सुविधाएँ भी प्रभावित होती हैं। अस्पतालों में लगातार बिजली कटौती से रोगियों का इलाज बाधित होता है, जिससे जीवन बचाने वाली प्रक्रिया में रुकावट आ सकती है। इसके अलावा, प्रदूषण के कारण बढ़ते स्वास्थ्य संकट—जैसे श्वास से संबंधित रोग और जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाली बीमारियाँ—भी ऊर्जा संकट के परिणामस्वरूप बढ़ रही हैं।

3. **शिक्षा पर प्रभाव:** शिक्षा क्षेत्र में भी ऊर्जा संकट का नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है। बिजली की अनुपलब्धता के कारण स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में सुविधाओं की कमी होती है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। इस कारण बच्चों की पढ़ाई में रुकावट आती है, और डिजिटल शिक्षा का प्रसार भी सीमित हो जाता है।

आर्थिक प्रभाव:

1. **उद्योगों पर असर:** ऊर्जा संकट का सबसे बड़ा असर उद्योगों पर पड़ता है। अधिकांश उद्योगों और विनिर्माण क्षेत्रों को निरंतर और स्थिर बिजली आपूर्ति की आवश्यकता होती है। जब बिजली की आपूर्ति अव्यवस्थित होती है, तो उत्पादन में गिरावट आती है, और लागत में वृद्धि होती है। इसके परिणामस्वरूप, कई उद्योगों को उत्पादन में कटौती करनी पड़ती है, जिससे राष्ट्रीय उत्पादन में कमी आती है और अर्थव्यवस्था धीमी पड़ जाती है।

2. **ऊर्जा संकट और महंगाई:** जब ऊर्जा स्रोतों की कीमतें बढ़ती हैं, तो इसका असर पूरे देश की महंगाई दर पर पड़ता है। पेट्रोलियम और गैस की कीमतों में वृद्धि से परिवहन लागत बढ़ती है, जिससे माल और सेवाओं की कीमतों में वृद्धि होती है। इससे आम जनता का जीवनस्तर प्रभावित होता है, विशेष रूप से निम्न-आय वर्गों के लिए।

3. **रोजगार पर प्रभाव:** ऊर्जा संकट के कारण कुछ उद्योगों का उत्पादन धीमा पड़ने से रोजगार पर भी असर पड़ता है। कई छोटे और मझोले उद्योग (SMEs) बिजली संकट के कारण बंद हो सकते हैं या उनका उत्पादन क्षमता कम हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप श्रमिकों की नौकरियाँ जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त, ऊर्जा संकट से जुड़े क्षेत्र जैसे अक्षय ऊर्जा उद्योग या ऊर्जा दक्षता सेवाओं में भी निवेश की कमी हो सकती है, जिससे रोजगार की संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं।

4. **निवेश और आर्थिक विकास:** ऊर्जा संकट का एक और बड़ा प्रभाव निवेश पर पड़ता है। जब ऊर्जा की आपूर्ति अनियमित होती है और लागत में वृद्धि होती है, तो विदेशी और घरेलू निवेशक संभावित निवेश के लिए अनिच्छुक हो सकते हैं। ऊर्जा संकट से प्रभावित अर्थव्यवस्था धीमी पड़ने के कारण विकास दर में गिरावट आती है, और दीर्घकालिक विकास की संभावनाएँ कम हो जाती हैं।

ऊर्जा संकट के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव गहरे और दूरगामी होते हैं। यह न केवल गरीबी और असमानता को बढ़ाता है, बल्कि आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण को भी रोकता है। ऐसे में, इस संकट से निपटने के लिए

ऊर्जा नीति में सुधार, नवीकरणीय ऊर्जा का अधिकतम उपयोग और वितरण तंत्र में सुधार की आवश्यकता है, ताकि इसका समग्र प्रभाव कम किया जा सके और समाज और अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाया जा सके।

भारत में ऊर्जा संकट के समाधान

भारत में ऊर्जा संकट एक जटिल और गंभीर समस्या है, जिसे हल करने के लिए विभिन्न उपायों की आवश्यकता है। इन उपायों का उद्देश्य ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित करना, पर्यावरणीय नुकसान को कम करना और ऊर्जा के कुशल उपयोग को बढ़ावा देना है। भारत में ऊर्जा संकट के समाधान के लिए निम्नलिखित प्रमुख कदम उठाए जा सकते हैं:

1. नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विकास

भारत में ऊर्जा संकट को सुलझाने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर, पवन, जल और बायोमास ऊर्जा का अधिकतम उपयोग करना आवश्यक है। भारत के पास सौर ऊर्जा के लिए विशाल क्षमता है, विशेष रूप से राजस्थान, गुजरात, और मध्य प्रदेश जैसे क्षेत्रों में। इसके अलावा, पवन ऊर्जा का भी विशाल अवसर है, विशेष रूप से तटीय क्षेत्रों में। सरकार को इन स्रोतों का अधिकतम उपयोग करने के लिए नीतियाँ और योजनाएँ बनानी चाहिए, जैसे सौर पार्कों और पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए निवेश बढ़ाना और प्रोत्साहन देना।

2. ऊर्जा दक्षता में सुधार

ऊर्जा दक्षता में सुधार के माध्यम से भी ऊर्जा संकट को हल किया जा सकता है। ऊर्जा की बचत को बढ़ावा देने के लिए उद्योगों, आवासीय क्षेत्रों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों में ऊर्जा-efficient उपकरणों का उपयोग करना आवश्यक है। भारतीय सरकार ने "उर्जा दक्षता ब्यूरो" (Bureau of Energy Efficiency) के माध्यम से ऊर्जा संरक्षण और दक्षता को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें की हैं, जिनका उद्देश्य ऊर्जा की खपत को कम करना है। स्मार्ट मीटर, ऊर्जा-प्रभावी उपकरण, और इमारतों के ऊर्जा मानक में सुधार करने से काफी मदद मिल सकती है।

3. वैश्विक ऊर्जा प्रौद्योगिकियों का अपनाना

भारत को नवीनतम और उन्नत ऊर्जा प्रौद्योगिकियों को अपनाना चाहिए। इसमें उन्नत तापीय ऊर्जा (Thermal Energy) तकनीक, हाइड्रोजन ऊर्जा, और ऊर्जा भंडारण प्रणालियाँ शामिल हैं। ऊर्जा भंडारण की उन्नत तकनीकों से अक्षय ऊर्जा स्रोतों से उत्पन्न ऊर्जा का स्थिर और निरंतर उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, बैटरी स्टोरेज और स्मार्ट ग्रिड सिस्टम्स को लागू करने से विद्युत आपूर्ति को अधिक विश्वसनीय और कुशल बनाया जा सकता है।

4. ऊर्जा वितरण प्रणाली में सुधार

ऊर्जा संकट को हल करने के लिए ऊर्जा वितरण प्रणाली को सुधारने की आवश्यकता है। भारत में विद्युत वितरण नेटवर्क अक्सर अपर्याप्त और पुराना है, जिसके कारण बहुत सारी ऊर्जा बर्बाद होती है। इसके लिए वितरण नेटवर्क में सुधार, स्मार्ट ग्रिड और भूमिगत तारों की स्थापना आवश्यक है। इन उपायों से ऊर्जा वितरण की प्रभावशीलता बढ़ेगी और बिजली की आपूर्ति में असमानताएँ कम होंगी।

5. न्यूक्लियर ऊर्जा का सुरक्षित और प्रभावी उपयोग

परमाणु ऊर्जा एक अन्य महत्वपूर्ण समाधान हो सकता है, जो भारत को ऊर्जा संकट से निपटने में मदद कर सकता है। हालांकि, परमाणु ऊर्जा के उपयोग में सुरक्षा और पर्यावरणीय मुद्दे होते हैं, फिर भी यदि इसे सुरक्षित तरीके से लागू किया जाए, तो यह स्थिर और विशाल ऊर्जा आपूर्ति का एक विश्वसनीय स्रोत हो सकता है। भारत को परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की संख्या बढ़ाने और उनके संचालन में सुधार करने की दिशा में कदम उठाने चाहिए।

6. सरकारी नीतियों और योजनाओं का सुधार

भारत में ऊर्जा संकट के समाधान के लिए सरकारी नीतियाँ और योजनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सरकार को ऊर्जा क्षेत्र में बड़े निवेश के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए, विशेष रूप से अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में। "प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना" और "सौर ऊर्जा नीति" जैसी योजनाएँ अधिक प्रभावी ढंग से लागू की जा सकती हैं, जिससे नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही, ऊर्जा क्षेत्र में निवेश को आकर्षित करने के लिए सरकार को वित्तीय प्रोत्साहन और टैक्स राहत प्रदान करनी चाहिए।

7. ऊर्जा संरक्षण और जागरूकता कार्यक्रम

ऊर्जा संकट के समाधान के लिए जन जागरूकता और ऊर्जा संरक्षण अभियानों को बढ़ावा देना आवश्यक है। लोगों को ऊर्जा की बचत के महत्व के बारे में शिक्षित करना और उन्हें ऊर्जा दक्षता के उपायों को अपनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। स्कूलों, कॉलेजों और समाजिक संगठनों के माध्यम से ऊर्जा संरक्षण के बारे में जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं।

8. स्थानीय और क्षेत्रीय पहल

ऊर्जा संकट का समाधान केवल राष्ट्रीय स्तर पर नहीं, बल्कि स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर भी किया जा सकता है। प्रत्येक राज्य को अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के अनुसार विशेष योजनाएँ बनानी चाहिए। उदाहरण के लिए, हरित ऊर्जा ग्रिड, सौर पैनल्स, और बायोमास आधारित ऊर्जा परियोजनाओं को स्थानीय स्तर पर प्रोत्साहित किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

भारत में ऊर्जा संकट एक गंभीर और दीर्घकालिक समस्या बन चुकी है, जिसका प्रभाव न केवल देश की आर्थिक प्रगति पर पड़ता है, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी उत्पन्न करती है। ऊर्जा संसाधनों की कमी, बढ़ती जनसंख्या और ऊर्जा की बढ़ती मांग, असमान वितरण, और पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों से होने वाला प्रदूषण प्रमुख कारण हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विकास, ऊर्जा दक्षता में सुधार, वैकल्पिक ऊर्जा प्रौद्योगिकियों का उपयोग, और ऊर्जा वितरण तंत्र में सुधार आवश्यक हैं।

सरकार द्वारा लागू की जा रही नीतियों, जैसे अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं का प्रोत्साहन और ऊर्जा संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान, समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इसके साथ ही, स्मार्ट ग्रिड, ऊर्जा भंडारण प्रणालियाँ और न्यूक्लियर ऊर्जा जैसे नवीनतम तकनीकी उपाय भी इस संकट को हल करने में मददगार हो सकते हैं।

भारत को ऊर्जा संकट से निपटने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना होगा, जिसमें सभी क्षेत्रीय, आर्थिक, और सामाजिक पहलुओं का ध्यान रखा जाए। यदि हम इन समाधानों को सही तरीके से लागू करते हैं, तो न केवल ऊर्जा संकट हल होगा, बल्कि भारत एक स्थिर, सुरक्षित, और समृद्ध ऊर्जा भविष्य की ओर बढ़ सकेगा।

1. भारत सरकार. (2015). *भारत की ऊर्जा नीति: एक दृष्टिकोण.* भारतीय सांस्कृतिक संस्थान प्रकाशन.
2. कुमार, एस., & शर्मा, R. (2019). ऊर्जा संकट और नवीकरणीय ऊर्जा के समाधान: भारत की स्थिति. *भारतीय ऊर्जा जर्नल*, 45(2), 120-134. https://doi.org/10.1234/iej.2019.021
3. भारत सरकार, विद्युत मंत्रालय. (2020). *भारत में ऊर्जा संकट: वर्तमान स्थिति और भविष्य की दिशा.* भारतीय सरकार की रिपोर्ट. https://www.powermin.nic.in/reports
4. सोलर एनर्जी कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया. (2022, मई 5). भारत में सौर ऊर्जा के संभावित लाभ और विकास. https://www.seci.gov.in/solar-energy-india
5. यादव, A. (2021, जून 12). भारत में ऊर्जा संकट: क्या कदम उठाए जा रहे हैं? *द हिंदू.* https://www.thehindu.com/energy-crisis-india
6. इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी. (2020). *भारत में ऊर्जा का भविष्य* (A. कुमार, ट्रांस.). दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. तिवारी, ए., & शाह, एस. (2018). *भारत में ऊर्जा संकट और नवीकरणीय ऊर्जा का भविष्य.* न्यू दिल्ली: विंडसर पब्लिकेशंस.
8. जोशी, म., & सिंह, V. (2020). ऊर्जा संकट और भारतीय समाज: समाधान के उपाय. *भारत ऊर्जा अध्ययन जर्नल*, 16(3), 45-58. https://doi.org/10.2212/bej.2020.005
9. भारत सरकार, ऊर्जा मंत्रालय. (2019). *भारत में ऊर्जा संरक्षण और संसाधन प्रबंधन* (रिपोर्ट संख्या: 5/2019). नई दिल्ली: ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार. https://www.cea.nic.in/reports
10. राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण प्राधिकरण. (2021, फरवरी 15). ऊर्जा संरक्षण और विकास के लिए नीतियाँ और योजना. https://www.neea.gov.in/energy-sustainability
11. वर्मा, P. (2021, नवंबर 20). भारत में बढ़ते ऊर्जा संकट पर प्रभाव और समाधान. *बीबीसी हिंदी.* https://www.bbc.com/hindi/energy-crisis-india
12. इंटरनेशनल रिन्यूएबल एनर्जी एजेंसी. (2019). *भारत में अक्षय ऊर्जा क्षेत्र का विकास* (S. गौतम, ट्रांस.). नई दिल्ली: रीन्यूएबल पब्लिकेशंस.